

पाठ—9
हस्तक्षेप
कवि— श्रीकांत वर्मा

कवि परिचय— श्रीकांत वर्मा का जन्म 18 दिसम्बर 1931 को बिलासपुर म.प्र. में हुआ।

पुरस्कार — इन्हें तुलसी पुरस्कार, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी पुरस्कार, शिखर सम्मान, कुमारन आशान पुरस्कार प्राप्त हुए।

रचनाएँ — जलसाघर, मगध, भटका मेघ, माया—दर्पण, झाड़ी सवाद, घर, दूसरे के पैर, जिरह, अपोलो का रथ, फैंसले का दिन, बीसवीं शताब्दी के अंधेरे में मुख्य रचनाएँ हैं

काव्यगत विशेषताएँ —

1. श्रीकांत वर्मा जी को कम शब्दों में अधिक कहने में महारथ हासिल है।
2. उन्होंने आधुनिक जीवन के यथार्थ का नाटकीय चित्र प्रस्तुत किया है।
3. भाषा आम बोलचाल की सरल व सरस है।
4. तत्सम तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है।

मूलभाव — कवि ने हस्तक्षेप कविता में आम व्यक्ति को गलत निर्णयों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया है। कवि आम जनता का आह्वान करते हुए कहते हैं। कि सत्ता के गलत निर्णयों के विरुद्ध विद्रोह करते हुए डरना नहीं चाहिए। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए समय—समय पर उसमें हस्तक्षेप की जरूरत होती है वरना व्यवस्था निरंकुश हो जाती है। इस कविता में ऐसे ही तंत्र का वर्णन है जहाँ किसी भी प्रकार के विरोध के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ी गई है। किन्तु कवि बताता है कि हस्तक्षेप तो मुर्दा भी कर जाता है। फिर जिंदा लोग चुप बैठे रह जायेंगे यह कैसे सम्भव हैं।

व्याख्या बिंदु— यह है कि कवि ने मगध की सत्ता की निरंकुशता एवं क्रूरता का वर्णन करते हुए दर्शाया है कि वहाँ ऐसा आतंकपूर्ण वातावरण हो गया है कि लोग भयवश किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए हैं। कवि सत्ताधारी वर्ग पर अप्रत्यक्ष रूप से व्यंग्य करते हुए कहता है कि मगध के लोग यह सोचते हैं कि मगध में शांति रहनी ही चाहिए। शांति भंग होने के डर से कोई छींक तक नहीं मार रहा है। मगध के अस्तित्व के लिए शांति का होना अत्यंत आवश्यक है।

निरंकुश शासन व्यवस्था में लोगों पर कितना ही अत्याचार क्यों न हो जाए कोई चीख पुकार नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करना शासन के विरुद्ध समझा जायेगा। शासन व्यवस्था में व्यवधान हो जायेगा। मगध सिर्फ नाम का मगध है रहने के लिए

मगध नहीं है। मगध के शासन तंत्र की अनुचित बातों पर कोई हस्तक्षेप नहीं करता कि ऐसा करने से वहाँ सत्ता का विरोध करने की परंपरा आरंभ हो जायेगी।

कवि कहता है तुम विरोध से कितना ही बचो परंतु तुम उसके स्पष्ट विरोध से बच नहीं पाओगे। जब कोई विरोध नहीं करता तो शहर के बीच से गुजरता मुर्दा यह प्रश्न करता है कि मनुष्य क्यों मरता है अर्थात् अत्याचार बढ़ने पर दबा-कुचला वर्ग भी निरंकुश सत्ता पर उंगली उठा सकता है।

‘हस्तक्षेप’ कविता की सप्रसंग व्याख्या आदर्श व्याख्या।

कोई छींकता तक.....रहनी ही चाहिए।

प्रसंग — प्रस्तुत काव्यांश आधुनिक काल के कवि ‘श्रीकांत वर्मा’ द्वारा रचित कविता ‘हस्तक्षेप’ से अवतरित है।

इस कविता में कवि ने कम से कम शब्दों में सत्ता की क्रूरता और निरंकुशता पर करारा व्यंग्य किया है। इस प्रकार की व्यवस्था विरोध की गुंजाइश ही नहीं छोड़ती। व्यवस्था के नाम पर शासकवर्ग आतंक का वातावरण बनाए रखता है। इसमें हस्तक्षेप की जरूरत तो बनी रहती है।

व्याख्या — कवि सत्ताधारी वर्ग की निरंकुशता पर अप्रत्यक्ष रूप से व्यंग्य करते हुए कहता है। कि मगध (शासन का प्रतीक) में शांति व्यवस्था बनी रहनी ही चाहिए। यह शान्ति व्यवस्था भंग न हो जाये, इसी डर से कोई छींकता तक नहीं। शांति के नाम पर शासक वर्ग नागरिकों को चुप कराके रखता है उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता पर नियंत्रण रखा जाता है। मगध है तो शांति बनी रहेगी। कोई भी नागरिक इस प्रतिबंध के विरोध में आवाज नहीं उठाता। उसे डराया जाता है कि इससे मगध की शासन व्यवस्था में विघ्न पड़ जायेगा, रूकावट आ जायेगी। उनका कहना है कि मगध में हर कीमत पर व्यवस्था बनी रहनी चाहिये।

भाव यह है कि सत्ता जब निरंकुश हो जाती है तब वह किसी नागरिक की विरोधी आवाज़ सहन नहीं कर पाती। वह नागरिकों को दबा कर रखती है। लोगों को शांति-व्यवस्था के भंग होने को भय दिखाया जाता है।

शिल्प सौन्दर्य—

1. ‘मगध’ शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से हुआ है। यह शासक वर्ग सत्ता का प्रतीक है।
2. कवि ने शब्दों में मितव्ययता बरती है।
3. कवि के मन का आक्रोश अभिव्यक्त हुआ है।
4. कविता अतुकांत है।

5. लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग है।

6. भाषा सीधी-सरल है।

कविता पर आधारित प्रश्न-उत्तर—

1. मनुष्य क्यों मरता है? पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर— इस पंक्ति में यह व्यंग्य निहित है कि जो लोग अन्याय अत्याचार को झेलते हैं वे मरे हुये के समान होते हैं। जिंदा लोगों को मरे हुआ के समान जीवन नहीं बिताना चाहिये। उसे मृतक के समान नहीं रहना चाहिए। निरंकुश व्यवस्था के विरुद्ध उसे अपनी आवाज उठानी चाहिये। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए।

2. मुर्दा के हस्तक्षेप करने से क्या तात्पर्य है।

उत्तर— 'मुर्दा के हस्तक्षेप करने से तात्पर्य है उस व्यक्ति से जो समाज के सबसे कमजोर तबके से आता है। जो सुविधाहीन है, सभी साधन व संसाधनों से दूर है। जब वह शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप अर्थात् प्रश्न पूछ सकता है। सत्ता द्वारा किए गए अनुचित कार्यों पर सवाल उठा सकता है तो अन्य मनुष्य जो सक्षम हैं वे हस्तक्षेप क्यों नहीं कर सकते। जनतंत्र, लोकतंत्र के लिए हस्तक्षेप करना बहुत आवश्यक हो जाता है।

अभ्यास कार्य—

1. मगध के माध्यम से हस्तक्षेप कविता किस व्यवस्था की ओर संकेत कर रही है।
2. मगध निवासी किसी भी प्रकार से सत्ता में हस्तक्षेप करने से क्यों कतरा रहे हैं।
3. "मगध अब कहने को मगध है रहने को नहीं " इस आधार पर मगध की स्थिति का वर्णन करो?
4. मुर्दे का हस्तक्षेप क्या प्रश्न खड़ा करता है। प्रश्न की सार्थकता को कविता के संदर्भ में बताओ।
5. लाक्षणिक प्रयोगों का स्पष्टीकरण :—
 - 1) कोई छींकता तक नहीं— छींक जैसी प्राकृतिक क्रिया भी अप्रत्यक्ष रूप से मना है। अर्थात् विद्रोह की जरा सी आवाज भी नहीं उठनी चाहिए बिल्कुल शांति रहनी चाहिए।
 - 2) कोई चीखता तक नहीं— निरंकुश शासन के विरुद्ध कोई भी (आम जनता) अपना आक्रोश व्यक्त नहीं कर सकता।
 - 3) कोई टोकता तक नहीं— शासन व्यवस्था की कमियों का विरोध करने के लिए कोई भी शासन कार्यों के बारे में बातचीत तक भी नहीं कर रहा है।